अपनों के भी अपने नहीं मोदी

मनोज कुमार झा

इस बार भारतीय जनता पार्टी सत्ता के प्रमुख दावेदार के रूप में अपने-आपको पेश कर रही है, पर इस पार्टी की मुसीबतें खत्म होती नज़र नहीं आ रहीं। जहां तक इसके गठबंधन का सवाल है, वह भी अभी आकार लेता दिख नहीं रहा है।

पार्टी में अभी प्रमुख नेताओं की सीटों को लेकर विवाद और उधेड़बुन की स्थिति बनी हुई है। भाजपा का मानना है कि इस बार मोदी की हवा है और भाजपा की सरकार व मोदी का प्रधानमंत्री बनना तय है। अगर मोदी की हवा है, जैसा कि भाट-चारण वाली भूमिका निभा रहा मीडिया भी लग़ातार कह रहा है तो मोदी किसी भी सीट से खड़े हों, उनकी जीत सुनिश्चित होनी चाहिए। फ़िर मोदी बनारस से खड़े होने के साथ-साथ गुजरात के वडोदरा से भी क्यों खड़े हो रहे हैं? प्रधानमंत्री पद के 'दुर्दमनीय' उम्मीदवार 'नमो-नमो' नरेन्द्र मोदी को 'असुरक्षाबोध' क्यों? असुरक्षा बोध नहीं तो गुजरात की एक सुरक्षित सीट पर क्यों खड़े हुए? जब मोदी के नाम की लहर है तो 'तीनों लोकों से न्यारी काशी' जहां बाबा विश्वनाथ विराजते हैं और जहां हिंदूधर्म की ध्वजा लहराती है, अयोध्या के बाद जिस पर संघियों का दावा है, वहां से एक प्रबल भाजपाई नेता की सीट काटने के बाद भी मोदी अपनी जीत के प्रति आश्वस्त क्यों नहीं है? दो सीटों से लड़ना तो यही जाहिर करता है कि लंबी-लंबी हांकने वाले मोदी जो 'फेंकू' नाम से भी फेमस हो चुके हैं, दुविधा में हैं। आजतक गुजरात से बाहर कभी निकले नहीं। डर स्वाभाविक है। बनारस धार्मिक नगरी होने के साथ ही साथ संस्कृति और राजनीति का गढ रहा है। **खास बात यह है कि बनारस भगवा प्रधान नहीं है। वहां का जनमानस कहीं अधिक उदार है। मस्ती वहां की फ़िजा में है। मोदी जैसे कट्टरपंथियों को खदेड़ देने का माद्दा वहां की जनता में हैं, बाकी पंडे-पुजारी तो मोदी के ही चरण धोएंगे। और धो-धो के पीलें तो क्या! जीत तो मिलती नहीं। इसीलिए सुरक्षित सीट वडोदरा।** ये है फेंकू 'शक्तिमान' मोदी का असली चरित्र जिसे ख़ुद पे भी यकीन नहीं, न अपने समर्थकों पे, न ही जनता पे। इसलिए सुरक्षित मांद अपने लिए जरूरी समझता है। अब देखना ये है कि मोदी गुजरात के बाहर बनारस से जीतते हैं या नहीं?

सिर्फ़ यही नहीं, भाजपा में बड़े बड़े नेताओं के बीच टिकटों को लेकर मारा-मारी और अफरा-तफरी की स्थिति बनी हुई है। लालकृष्ण आडवाणी जो भाजपा को केंद्र की सत्ता में लाने के प्रमुख आर्किटेक्ट रहे, अपनी परंपरागत सीट गांधीनगर से चुनाव न लड़के भोपाल से लड़ना चाहते थे और इसके लिए तैयारियां भी शुरू हो गई थीं, पर आखिरकार पार्टी ने यह तय कर दिया कि वे गांधी नगर से ही चुनाव लड़ेंगे।

लालकृष्ण आडवाणी के गांधीनगर से चुनाव नहीं लड़ने के पीछे कारण यह बताया जाता है कि उन्हें डर है कि मोदी कहीं सेटिंग कर हरवा न दें। साथ ही, गत विधानसभा चुनाव में गांधी नगर की चारों सीटें भाजपा के हाथ से निकल गई थी। अब यह बात किसी से छुपी नहीं है कि आडवाणी मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाये जाने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने अपना विरोध कई तरह से जाहिर किया था। आडवाणी का भरोसा शिवराज सिंह पर ज़्यादा रहा है। उन्होंने मोदी की तुलना में शिवराज को प्रधानमंत्री पद का बेहतर उम्मीदवार बताया था। खास बात यह भी है कि शिवराज कभी साम्प्रदायिक और उग्र भाषा नहीं बोलते, जनता से अधिक जुड़े हुए माने जाते हैं और आडवाणी भी उग्र हिंदूवाद की ध्वजा लहराने के बाद अब उदारवादी छवि के लिए जाने जाते हैं। जिन्ना प्रकरण के बाद उनमें यह बदलाव हुआ और संघ से उनकी ठन गई, जिसके बाद उन्हें पार्टी अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा था। आडवाणी किशोरावस्था से ही संघ के स्वयंसेवक रहे हैं, जनसंघ के शीर्ष नेताओं में रहें। 1977 में जनता पार्टी की सरकार में अटलबिहारी वाजपेयी जहां विदेशमंत्री थे, आडवाणी सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे। कभी लोकसभा में महज़ दो सीट जीतने वाली भाजपा को केंद्र की सत्ता में लाने में आडवाणी का ही प्रमुख योगदान रहा है। रामरथ यात्रा शुरू कर पूरे देश में उन्होंने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण किया और अयोध्या में राम मंदिर विवाद को इस हद तक आगे बढ़ाया कि उसकी परिणति बाबरी मस्जिद ध्वंस में हुई। मोदी का उभार तो इसके बाद हुआ और इसी सांप्रदायिक वैमनस्य की पृष्ठभूमि में उन्होंने गोधराकांड के बाद सुनियोजित तौर पर पूरे गुजरात में दंगे करवाए। मुसलमानों का कत्लेआम कराने के कारण मोदी संघ के प्रिय पात्र बन गए, क्योंकि संघ नेतृत्व दंगाइयों को ही पसंद करता है। मोदी के रूप में उसे कट्टर मुसलमान-विरोधी और सफ़ल दंगा आयोजनकर्ता मिल गया वहीं, आडवाणी ने मौके की नज़ाकत को भांपते हुए उदारवादी मुखौटा पहन लिया था जो संघ नेतृत्व को नागवार गुजरा। संघ हिंसक और आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देता रहा है। इसके लिए प्रमाण देने की जरूरत नहीं। इतिहास में प्रमाण बिखरे पड़े हैं। एक ताज़ा प्रमाण ये है कि समझौता एक्सप्रेस ब्लास्ट (फ़रवरी, 2007)के मुख्य अभियुक्त असीमानंद ने स्वीकार किया है कि इस सम्बंध में मोहन भागवत (सरसंघ चालक, आर एस एस) को पूरी जानकारी थी और उन्होंने कहा था कि मुस्लिम ठिकानों पर बमबारी जरूरी है। असीमानंद गुजरात में रहकर काम करता था और नरेन्द्र मोदी से भी उसकी ख़ास मुलाकातें हुआ करती थीं। असीमानंद के अनुसार,मोदी भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ आतंकवादी गतिविधियां चलाने के लिए उसे उत्साहित करते थे। उस समय वे गुजरात के मुख्यमंत्री नहीं बने थे, पर केशुभाई को हटाकर जल्दी ही बनने वाले थे।

स्पष्ट है कि संध ने उदारवादी मुखौटा पहन लेने पर आडवाणी को दरकिनार कर दिया, साथ ही भ्रष्ट गडकरी को भाजपा अध्यक्ष बनवा दिया, क्योंकि वो संघ को पर्याप्त धनराशि देता था। अपने कर्मों के कारण जब गडकरी के सामने पार्टी अध्यक्ष पद छोड़ने की नौबत आई तो राजनाथ सिंह को अध्यक्ष बनवाया संघ ने, क्योंकि अपेक्षाकृत लो प्रोफाइल होने के कारण वे संघ के कहे से बाहर जाने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। वैसे, अब देखा जाए तो राजनाथ, मुरली मनोहर, लाल जी टंडन जैसे नेता मोदी के आगे कहीं नहीं ठहरते। जब आडवाणी जैसे दिग्गज की भाजपा में कोई पूछ नहीं रही और जिन्हें मोदी से यह भय है कि भितरघात कर वह कहीं गांधीनगर सीट से हरवा न दें तो दूसरों की क्या बिसात।

कुल मिलाकर, अब संघ के आशीर्वाद से भाजपा पर मोदी हावी है। इससे भाजपा के बड़े-बड़े नेताओं की भी नींद हराम हो चुकी है। उन्हें डर है कि ऐसे में उनकी अहमियत कुछ भी नहीं रह जाएगी और अपने टुच्चेपन की बदौलत मोदी उनसे बाजी मार जाएगा। उन्हें मोदी के आदेशों से चलना पड़ेगा जिसका इतिहास, संस्कृति और भूगोल का ज्ञान बस उतना ही है जितना सड़क किनारे चाय बेचने वाले किसी अशिक्षित व्यक्ति का हो सकता है। मोदी ने तो चाय बेची और संघ में लाठी संचालन सीखा, दंगे कराने में महारत हासिल की और सियासत की रपटीली राहों पर चल पड़े। पढ़ाई-लिखाई से तो दूर-दूर का वास्ता नहीं रहा इस आदमी का। वैसे, डिग्री ले रखी है। जो भी हो, विरोधियों की छोड़े, अब तो भाजपा के भीतर भी कई नेता मोदी के ख़िलाफ़ हो रहे हैं, क्योंकि अपनी उपेक्षा कौन बर्दाश्त कर सकता है। अगर मोदी बनारस से जीत जाते हैं तो यह भोले बाबा की कृपा होगी। नहीं तो वडोदरा से तो जीत पक्की ही है। पर क्या पीएम की कुर्सी पाना इतना आसान है! जो गुजरात से बाहर जीत नहीं सकता, वो पीएम बनेगा तो देश का क्या होगा? क्या यह देश भी मोदी का गुजरात बन जाएगा, जहां मुसलमान भय और आतंक के माहौल में जीने को मजबूर होंगे। मोदी ने बचपन में चाय बेची है, गुजरात की सत्ता हाथ में आई तो अडानी और अंबानी को गुजरात बेच दिया। जी हां, अब गुजरात अडानी और अंबानी का है। मुख्यमंत्री के रूप में मोदी उनका पहरेदार है। इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं। मोदी को कुछ न कुछ बेचने की आदत है। पीएम बना तो इन अडानियों-अंबानियों के हाथ कहीं देश ही न बेच डाले। इन थैलीशाहों की नज़र पूरे देश के प्राकृतिक संसाधनों-खेत, नदी, पहाड़, जंगल, खदान और तेल पर है।

मोदी से ख़तरा सिर्फ़ विरोधियों को ही नहीं, भाजपा के बड़े-बड़े नेताओं को भी है। अटल और आडवाणी भाजपा के शीर्ष पुरुष माने जाते रहे हैं। अटल के बाद स्वाभाविक रूप से देश के शीर्ष पद यानी प्रधानमंत्री पद पर दावेदारी आडवाणी की बनती थी। मोदी और आडवाणी की विचारधारा भले ही एक हो, पर इसमें कोई दो राय नहीं कि आडवाणी के सामनें मोदी की कोई औकात नहीं है। दूसरी बात, अन्य दलों के बीच आडवाणी की स्वीकार्यता कहीं ज़्यादा है। जद (यू) सिर्फ़ मोदी की वजह से भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए से अलग हो गया। ऐसे में, प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार नरेन्द्रमोदी को बनाना आडवाणी के साथ घोर अन्याय माना जाएगा। और इसके बाद अब उन्हें भाजपा की राजनीति में दरकिनार करने की साजिश। जाहिर है, इससे संघ को फ़ायदा नहीं होने जा रहा। उदार भारतीय जनमानस कट्टर और मुसलमान विरोधी मोदी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार नहीं कर पाएगा।

भाजपा के कई बड़े नेता भीतर ही भीतर इस बात को समझ रहे हैं कि मोदी की वजह से उनकी औकात कम होती जा रही है और उन्हें अपनी पक्की सीटों से हाथ धोना पड़ा है। वे देख रहे हैं कि अटल के बाद आडवाणी प्रधानमंत्री पद के स्वाभाविक दावेदार थे और जब उनकी कुछ नहीं चली तो दूसरों का हाल क्या होगा। ऐसे नेता समय आने पर मोदी के ख़िलाफ़ गोलबंद हो सकते हैं। अगर मोदी को आशानुरूप सफलता नहीं मिली तो भाजपा के असंतुष्ट तत्व उनके ख़िलाफ़ एकजुट हो जाएंगे और संघ कुछ नहीं कर पाएगा। बहरहाल, जैसी स्थितियां बनती जा रही हैं, उन्हें देखते हुए लगता है कि भाजपा में विभाजन लगभग तय है।

इस चुवान में हार का डर भाजपा के कई नेताओं को सता रहा है, जिनकी पक्की सीट गई, उन्हें तो सता ही रहा है, सबसे बड़ी बात कि पीएम पद के उम्मीदवार रणबांकुड़े मोदी को भी सता रहा है। तभी तो दो जगह से खड़े हुए और शर्म भी नहीं आई। 56 इंच की छाती क्या ऐसी ही होती है।

मज़ा तो तब आएगा जब भाजपा को मोदी के नेतृत्व में आशानुरूप सीटें नहीं मिलेंगी। ऐसी स्थिति में भाजपा के मोदी विरोधी धड़े का उभरना तय है।

भाजपा में गुटबंदी कोई नई बात नहीं। अभी प्रबल गुट आडवाणी गुट है। आडवाणी ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर रखी है कि इस बार न तो कांग्रेस और न ही भाजपा को सरकार बनाने लायक मत मिलेंगे। उन्होंनें यह भी कहा था कि भाजपा जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी है। सच कहा है आडवाणी ने। और भले ही कुछ झूठ भी कहा हो, काफ़ी झूठ कहा हो, पर यह तो सच कहा कि भाजपा की सरकार नहीं बनेगी। संभावना यही जताई जा रही है कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा अथवा भाजपा गठबंधन की सरकार नहीं बनेगी, भले ही बिका हुआ मीडिया कुछ भी कहे। नरेन्द्र मोदी के विपक्ष में सबसे खास बात यह है कि भाजपा के कुछ दिग्गज भी उन्हें पसंद नहीं करते और अपने वजूद के लिए उन्हें ख़तरा मानते हैं। वे कौन हैं, समझ पाना मुश्किल नहीं।

तुर्की-ब-तुर्की

पाकिस्तानी एजेंट का सहारा

नरेन्द्र मोदी ने कहा, "अरविंद केजरीवाल पाकिस्तान का एजेंट है।"

हमारा कहना है–

- एक अनपढ आदमी जब चौतरफ़ा बहस में घिर जाता है और देने के लिये उसके पास कोई तर्क संगत जवाब नहीं होता तो वह ऐसे ही ऊलजलूल तथा अप्रासंगिक जुमले गढता है।
- आपके चहेते अंबानी को अटल बिहारी वाजपेयी ने बतौर प्रधानमंत्री तेल व गैस के कुएं एलॉट किये थे। उनके बाद आई कांग्रेस सरकार ने न केवल इनकी रक्षा की बल्कि अंबानी की इच्छानुसार गैस की दरों में वृद्धि भी करती रही। ऐसे में जब केजरीवाल ने आपके लाडले अंबानी पर हमला किया तो आप के द्वारा उन्हें पाकिस्तानी एजेंट बताना स्वाभाविक ही है।
- दरअसल मोदी यह मानकर बैठे हैं कि जिस अंबानी पर उनकी व कांग्रेस की कृपादृष्टि बनी हुई है उस पर कोई देश भक्त भारतीय तो हमला कर ही नहीं सकता और जो कोई करेगा वह पाकिस्तानी एजेंट ही होगा।
- विकास का मुखौटा तार–तार हो जाने के बाद मोदी को अपने असल एजेंडे – मुसलमानों से घृणा–पर तो आना ही था सो वे आ गये। इस पर आने के लिये पाकिस्तान का नाम लेना जरूरी होता है।
- चलो केजरीवाल तो पाकिस्तानी एजेंट हो गया, पर आपने अंबानी को जो गैस के 16 डॉलर प्रति यूनिट दिलाने की सिफ़ारिश कर रखी है उसमें कौन सी देश भक्ति है?

यह खेल तो कांग्रेसी ही खेल सकते हैं

केजरीवाल सरकार के लिये। सोनिया गांधी ने कहा "सरकार चलाना बच्चों का खेल नहीं है"

हमारा कहना है-

- कांग्रेसी नज़रिये से बिल्कुल ठीक कहा आपने दिल्ली की केजरीवाल सरकार के लिये। आपकी पार्टी के सहारे, आपके ही दो मन्त्रियों व आपके फ़ाइनेंसर अम्बानी के विरुद्ध एफ आई आर दर्ज कराकर सरकार चलाना वाकई बच्चों का खेल नहीं है।
- बिजली कम्पनियों की अंधी लूट रोकने के लिए उनका ऑडिट शुरु कराने के बावजूद सरकार चलाना और वह भी अल्पमत के सहारे कोई बच्चों का खेल नहीं है।
- घोटाले दर घोटाले किए बिना व देश के संसाधनों को लुटवाए बिना सरकार चलाना वाकई बच्चों का खेल नहीं है सोनिया जी। यह काम तो केवल आपके या मोदी गिरोह के खेले खाए लुटेरे ही कर सकते हैं।
- सोनिया जी, आप यह बताना तो भूल ही गईं कि बच्चों का यह खेल खेलने में तो केवल आपका युवराज ही सक्षम है, घोटालेबाजी की ट्रेनिंग अब उसकी पूरी जो हो चुकी है।